सामान्य जन के लिए महत्वपूर्ण विचार

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-I (आधुनिक इतिहास) से संबंधित है।

द हिन्दू

लेखक - आशीष कोठारी (समाजसेवी)

27 नवम्बर, 2018

''गांधी और मार्क्स पहले से कहीं ज्यादा आज प्रासंगिक क्यों हैं?''

अभी हाल ही में इसी साल मोहनदास करमचंद गांधी की 150वीं जयंती और कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती मनाई गयी है। ऐसी सालगिरह प्रतीकवाद का अवसर बन सकती हैं - उदाहरण के लिए, भारत सरकार ने गांधी की सालगिरह के जश्न मनाने के लिए 100 से अधिक सदस्यों के साथ एक समिति की स्थापना की, जो विभिन्न पार्टियों, कुछ अकादमिक और गांधीवादी श्रमिकों के राजनीतिक दलदलों से घिरा हुआ है। मुझे (लेखक) संदेह है कि यह एक केवल ढोंग है, जो हर साल 2 अक्टूबर को किया जाता है। उम्मीद करता हूँ मैं गलत साबित हो जाऊ, लेकिन आज स्थिति ऐसी है कि गांधी के लिए कोई भी सार्थक श्रद्धांजलि आज के राजनीतिक और आर्थिक शक्ति के मूलभूत सिद्धांतों पर सवाल उठाती है और धर्म और राष्ट्रवाद के बड़े पैमाने पर दुर्व्यवहार पर एक गंभीर आलोचना को इंगित करती है।

गांधी जी धर्म को भारत का प्राण कहा है। पर मार्क्सवाद धर्म को अफीम की गोली मानता है। गांधीजी कहते हैं कि भारत से धर्म निकल जाये तो फिर वह भारत ही नहीं रह जायेगा। पर मार्क्सवादी भारत में से ही नहीं, पूरी दुनिया से धर्म को नष्ट करने पर आतुर हैं।

प्राय: मार्क्सवादी गांधी को मार्क्स से इसीलिए कमतर आंकते रहे हैं, क्योंकि वे उनके उपक्रम को बौद्धिक कम, भावनात्मक अधिक मानते हैं। ऐसा लगता है कि गांधी कुछ-कुछ अन्त:प्रेरणा से काम कर रहे थे और इसीलिए कई लोगों को उनके आंदोलन में तार्किकता खोजने में कठिनाई मालूम पड़ती है।

गांधी और मार्क्स में तुलना करके एक को दूसरे से श्रेष्ठ ठहराने का यहां इरादा नहीं और उससे अधिक गैर-मार्क्सवादी कार्य कुछ हो नहीं सकता। लेकिन एक अंतर जरूर है: मार्क्स अपने स्वप्न को पूरा करने के लिए कोई क्रियाशील अभियान जीवन पर्यंत चलाने वाले न थे, गांधी ने खुद एक बड़ा संगठन खड़ा किया और कई आंदोलनों का नेतृत्व भी किया।

एक दूसरे अर्थ में मार्क्स और गांधी एक जैसे जान पड़ते हैं। दोनों ने असंभव आदर्श की कल्पना की।

गांधी का अहिंसक समाज और मार्क्स का वर्ग-विहीन समाज दोनों ही नामुमकिन ख्याल हैं।

मुझे (लेखक) लगता है कि मैं संदेहवादी होकर ज्यादा सुरक्षित हूं और शायद मार्क्स के लिए भी यह सही रहेगा, ऐसा इसलिए क्योंकि दुनिया के उन हिस्सों में भी तथाकथित क्रांतिकारी सरकारों द्वारा कार्ल मार्क्स के जन्म का जश्न मनाया जा रहा है जहां वामपंथी दल अभी भी सत्ता में है।

इसका मतलब यह नहीं है कि ये दो आंकड़े अब प्रासंगिक नहीं रहे। इसके विपरीत, वे पहले से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। उनके विचार अभी भी दुनिया की अधिकांश आबादी जो पूंजीवाद, राज्य नियंत्रणवाद/सांख्यवाद, पितृसत्तात्मक और दमन के अन्य ढांचे द्वारा हाशिए पर स्थित है, उनके लिए महत्त्वपूर्ण है। जैसा कि यह बाकी प्रकृति के लिए है, मानवता द्वारा इतनी बुरी तरह दुर्व्यवहार किया गया है और यह विचार है अभी भी जीवित और समृद्ध है।

प्रतिरोध और निर्माण

और इसलिए हमें दुनिया भर में संघर्ष (रेजिस्टेंस) और निर्माण (कंस्ट्रक्शन) की कई गतिविधियों के लिए आशातीत होना चाहिए। ये आंदोलन हमें एहसास कराते हैं कि इन्हें कितने अन्यायों का सामना करना पड़ रहा है।

चलिए अब संघर्ष का उदहारण लेते हैं। यदि हम भारत में किसी भी समय का उदाहरण लेते हैं तो हम पाएंगे कि वहां कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां आदिवासी, किसान, मछुआरे, चरवाहे और अन्य लोग तथाकथित विकास परियोजनाओं के लिए अपनी भूमि या जंगल या पानी को बताने के लिए इनकार कर रहे हैं। एक हजार किसानों ने प्रधानमंत्री की बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए अपनी भूमि देने से इनकार और अपनी आपत्ति जाहिर की हैं। इसके अलावा, ऐसा नहीं है कि ऐसे हालात केवल भारत में ही है, लैटिन अमेरिका में ऐसे कई समाचार हैं जो कि प्रेरणादायक और निराशाजनक दोनों हैं। स्वदेशी लोगों ने खनन और तेल निष्कर्षण के खिलाफ अपने क्षेत्रीय अधिकारों के लिए विरोध कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर पीपुल्स मूवमेंट्स और अक्टूबर में एकता परिषद द्वारा राष्ट्रव्यापी रैलियों का आयोजन किया गया। उन्होंने भूमि और वन अधिकारों, सांप्रदायिक सद्भाव, श्रमिकों की सुरक्षा और अन्य कारणों के लिए आंदोलन किए जो किसी भी विचारधारात्मक शिविर में इतना आसान नहीं हैं।

इसी तरह के कई उदाहरण निर्माण से भी संबंधित है। दुनिया भर में टिकाऊ और समग्र कृषि, समुदाय के नेतृत्व वाले पानी/ऊर्जा/खाद्य संप्रभुता, सामान्य जन के लिए संसाधन/ज्ञान, स्थानीय शासन, सामुदायिक स्वास्थ्य और वैकल्पिक शिक्षा, अंतर-समुदाय शांति निर्माण जैसे कई अविश्वसनीय उदाहरण हैं।

इन वैकल्पिक आंदोलनों में से कई ऐसे उदाहरण है जिससे मुझे (लेखक) गांधी और मार्क्स (और अम्बेडकर, रवींद्रनाथ टैगोर, रोजा लक्समबर्ग और विभिन्न दिग्गजों) के विचारों से प्रेरणा मिलती है और यह कई स्वदेशी और आदिवासी, दलित, किसान और इतिहास के

माध्यम से अन्य 'लोक' क्रांतिकारियों के लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण रखता है। ऐसे कई उदाहरण हैं जो भारतीय परिदृश्य की झलक पेश करते हैं: कुछ हजार दलित महिला किसान जिन्होंने तेलंगाना में अन्ना स्वराज (खाद्य संप्रभुता) हासिल की है और साथ इन्होंने ने अपने जाति की स्थिति भी बदलने में सफलता प्राप्त की है; गडचिरोली के कई दर्जन गोंड आदिवासी गांवों ने खनन रोकने के लिए महा ग्राम सभा बनाई है और शासन और आजीविका सुरक्षा के अपने दृष्टिकोण पर काम करते हैं; चेन्नई के पास एक दलित सरपंच ने मार्क्सवादी और गांधीवादी दोनों सिद्धांतों को मिलाकर अपने गांव को बदलने का प्रयास किया है।

कई प्रतिरोध और वैकल्पिक आंदोलनों में मुझे जो महत्त्व मिला है वह है स्वायत्तता, आत्मनिर्भरता, शासन और अर्थव्यवस्था, दूसरों की स्वतंत्रता की जिम्मेदारी के साथ स्वतंत्रता और बाकी प्रकृति के प्रति सम्मान की खोज है। हालांकि, ये आंदोलन अक्सर अधिक जवाबदेह राज्य से नीतिगत हस्तक्षेपों से संबंधित हैं, वहीं यह केंद्रीयकृत राज्य के लिए अंतर्निहित सहज-विरोधी भी होती है, क्योंकि यह गांधीवादी स्वराज और मार्क्सवादी साम्यवाद में और अराजकता के कई संस्करणों में निहित है।

अंतर को भरना

और जब गांधी पूंजी के समक्ष कमजोर थे और मार्क्स मनुष्यों के बीच मौलिक आध्यात्मिक या नैतिक संबंधों पर जोर देने पर थे, ये आंदोलन अक्सर इन अंतरालों को भरने में सहायक सिद्ध होते थे। उनमें से कई पारिस्थितिकीय लचीलापन और ज्ञान को फिर से स्थापित करने की आवश्यकता को एकीकृत करते हैं। इसके साथ ही वे 'विकास' के मूलभूत सिद्धांतों को भी चुनौती देते हैं, विशेष रूप से आर्थिक विकास पर गलत निर्धारण, लगातार बढ़ते उत्पादन और खपत पर निर्भरता और असमानता का तिरस्कार।

GS World डीम...

गांधीवाद और मार्क्सवाद के बीच समानताएं और असमानताएं

आदर्श राज्य की अवधारणा

- महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स के बीच एक बड़ी समानता है। हालांकि, दोनों का अंतिम उद्देश्य एक राज्यविहीन और वर्गविहीन समाज की स्थापना करना ही था, लेकिन इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उनके साधन अलग-अलग थे। जहाँ एक तरफ महात्मा गांधी इसे अहिंसा के माध्यम से प्राप्त करना चाहते थे, तो वहीं दूसरी तरफ मार्क्स हिंसक माध्यम से इसे हासिल करना चाहते थे।

पूंजीवाद

- हालांकि महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स दोनों पूंजीवाद और शोषण का विरोध करते थे, फिर भी उन्होंने पूंजीवाद को हिंसक साधनों से नहीं बल्कि आर्थिक विकेन्द्रीकरण के माध्यम से, कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करके और पूंजीवादी ट्रस्टियों को बनाकर अलग-अलग साधनों का प्रचार किया। कार्ल मार्क्स पूंजीवाद के खिलाफ थे। वह समाजवाद का जनक था। वह किसी भी रूप में पूंजीवाद को सहन करने के लिए तैयार नहीं थे।
- लेकिन कार्ल मार्क्स इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वह हिंसक साधनों को नियोजित करने में विश्वास करता था। इन्हें आर्थिक विकेंद्रीकरण में कोई भरोसा नहीं था। पूंजीवाद को जड़ से नष्ट करने के लिए वह क्रांति के माध्यम से सरकार को हटाना चाहते थे।

आध्यात्मिकता बनाम सामग्री

- महात्मा गांधी निर्णायक रूप से एक आध्यात्मिकवादी थे। उनके जीवन के हर पहलू पर धर्म का गहरा असर था। वह संत और भगवान में काफी विश्वास रखते थे। उनके लिए भौतिकवाद और जीवन की विलासिता का कोई महत्त्व नहीं था। उन्होंने कहा कि मनुष्य की जरूरते कम से कम होनी चाहिए। उन्होंने धर्म से रहित राजनीति को महत्व नहीं दिया।
- कार्ल मार्क्स ने धर्म को श्रमिकों के लिए अफीम माना, क्योंकि उनके विचार में धर्म ने मनुष्य को घातक बना दिया है और इससे पूंजीवाद के खिलाफ श्रमिकों में असंतोष उत्पन्न नहीं होता है। मार्क्स भगवान पर विश्वास नहीं करता था। वह भौतिकवादी थे और उन्होंने इतिहास की भौतिकवादी और आर्थिक व्याख्या की, जिसमें उन्होंने आर्थिक कारकों के महत्त्व पर बल दिया।

अंत और उसका मतलब

- महात्मा गांधी एक अच्छा अंत प्राप्त करने के संबंध में हिंसक साधनों का उपयोग करने के पक्ष में नहीं थे। इसलिए, उन्होंने भारत की आजादी की उपलब्धि के लिए अहिंसा को अपनाया और हिंसक लोगों सहित उन सभी प्रकार के साधनों को अपनाने से इनकार कर दिया, जो हिंसा के मार्ग पर थे।
- इसके ठीक उलट मार्क्सवादी हिंसा में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि पूंजीवाद को अहिंसा से समाप्त नहीं किया जा सकता है और हिंसा के उपयोग के बिना समाजवादी क्रांति संभव नहीं है।

युद्ध का स्तर

- मार्क्सवादियों को वर्ग संघर्ष में गहरा विश्वास है। मार्क्स ने कहा कि शुरुआत से ही प्रत्येक देश में दो वर्ग थे। एक वर्ग शोषण करने वालों का और दूसरा शोषक का था। हालांकि इन वर्गों के अलग-अलग देशों में अलग-अलग नाम थे। आज पूंजीपति शोषक हैं और श्रमिकों का शोषण किया जाता है। मार्क्स के मुताबिक, दोनों के बीच समझौता कभी नहीं हो सकता है और दोनों के बीच लगातार संघर्ष होगा।
- महात्मा गांधी ने कहा कि वर्ग-संघर्ष देश को बर्बाद करेगा और इससे उत्पादनों में काफी कमी आएगी। सभी संपत्तिधारी लोग बुरे नहीं होते। अपने विचार को बदलने की आवश्यकता है।

GS World Committed to Excellence

- उन्होंने कहा कि बड़े उद्योगों ने पूंजीवाद को प्रोत्साहित किया है। महात्मा गाँधी कुटीर उद्योगों के पक्ष में थे, जिसने श्रमिकों को पूंजीपतियों के प्रभुत्व से मुक्त कर दिया। वह चाहते थे कि लोग अपनी दैनिक जरूरतों को सीमित करें और एक साधारण जीवन जिए।

पूंजी का निवेश

- पूंजी के निवेश के संबंध में मार्क्स और गांधीजी के विचार बिलकुल अलग-अलग हैं। मार्क्सवादियों का कहना है कि उत्पादन के साधनों का समाजीकरण होना चाहिए। सबसे पहले वे सभी उद्योगों के नियंत्रण को स्थानांतरित करना चाहते हैं। महात्मा गांधी निजी पूंजी के निवेश की अनुमति देते हैं लेकिन इसके माध्यम से शोषण नहीं चाहते थे।
- वह पूंजीपतियों को राष्ट्रीय संपत्ति को ट्रस्टी बनाना चाहते थे। यदि पूंजीपति ट्रस्टी बनने के लिए सहमत नहीं हैं, तो वह न्यूनतम बल का उपयोग करके पूंजीपतियों के उद्योगों को नियंत्रित करने के लिए राज्य को शक्ति देने के लिए तैयार है। वह मकान मालिकों से जमीन छीनने के पक्ष में भी नहीं थे।
- वह भूमि पर किसी के निजी स्वामित्व को स्वीकार करने के लिए तैयार थे, जबकि मार्क्स भूमि पर निजी स्वामित्व की अनुमति देने के लिए तैयार नहीं था।
- गांधी सहकारी खेती के पक्ष में भी थे, जबकि मार्क्सवादी सामूहिक खेती के पक्ष में थे, जिसमें राज्य का एक बड़ा नियंत्रण होता है।

लोकतंत्र बनाम तानाशाही

- गांधीजी को लोकतंत्र में दृढ़ विश्वास था, लेकिन उन्होंने पश्चिमी लोकतंत्र को अपूर्ण माना। उन्होंने कहा कि सत्ता का विकेंद्रीकरण होना चाहिए। गांव में पंचायतों को और अधिक शक्तियां दी जानी चाहिए और गांवों को पूर्ण स्वायत्तता दी जानी चाहिए। वह कल्याणकारी राज्य के समर्थक थे और तानाशाही या स्वतंत्रता से नफरत करते थे। मार्क्सवादी सर्वहारा के तानाशाही में विश्वास करते हैं। वे श्रमिकों को अधिकतम शक्ति देना चाहते हैं। मार्क्सवादी राज्य को और अधिक शक्तियां देना चाहते हैं।
- मजदूर वर्ग के नाम पर, इन शक्तियों का उपयोग यू.एस.एस.आर., चीन और पूर्वी यूरोप के कम्युनिस्ट देशों में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा किया गया है। राज्य ने व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया है और लोकतंत्र खत्म हो गया हैं।
- गांधीजी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का एक सशक्त समर्थक थे। वह प्रेम की शक्ति के साथ पूरी मानवता पर जीतना चाहते थे। इस प्रकार हम इनकार नहीं कर सकते कि दोनों के बीच कुछ समानताएं और असमानताएं हैं।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. गांधी जी के अनुसार, अगर धर्म को निकाल दिया जाए, तो भारत अधूरा हो जाएगा।
   2. मार्क्सवादी धर्म को अफीम की गोली मानते हैं।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. गांधी जी जहाँ वर्ग विहीन समाज का समर्थन करते हैं, वहीं मार्क्स अहिंसक समाज का पक्ष प्रस्तुत करते हैं।
   2. मार्क्सवादी गांधीजी को भावनात्मक कम, बौद्धिक अधिक मानते हैं।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: 'एक ओर जहाँ गांधी जी सामाजिक विषमताओं को आर्थिक विकेन्द्रीकरण के माध्यम से दूर करना चाहते थे, वहीं कार्ल मार्क्स क्रांति के माध्यम से।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

नोट :
26 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) होगा।